अध्याय 7

विभिन्न परिवेशों में मानव जीवन (2)

प्राकृतिक परिस्थितियाँ हमारी आजीविका के अलग–अलग अवसर प्रदान करती हैं। पृथ्वी पर मौजूद विभिन्न स्थलरूप और पर्यावरण हमारा आवास बनाते हैं। कुछ लोग पहाड़ों पर रहते हैं, तो कुछ मैदानो में या जंगलों में। वहीं कुछ लोग रेगिस्तान में रहते हैं तो कुछ समुद्र के किनारे तटीय इलाकों में। नदियों द्वारा पोषित मैदानों की उपजाऊ मिट्टी में लोग खेती करते हैं। वहीं रेगिस्तानों में न ही उपजाऊ भूमि होती है और न ही पर्याप्त पानी। ऐसी दशा में मैदानों की तुलना में रेगिस्तानों में खेती बहुत कम होती है। यहाँ लोग पशुपालन करते हैं। समुद्र के समीप रहने वाले लोगों के आय का साधन जल हैं। इस प्रकार अलग–अलग प्राकृतिक परिवेश में लोग भिन्न–भिन्न आजीविका के साधन जुटाते हैं। ये आजीविका के स्रोत न केवल अपने परिवेश से प्रभावित होते हैं अपितु अपने पर्यावरण को भी प्रभावित करते हैं। इस तरह मानव तथा प्रकृति के मध्य की अंतःक्रिया अनूठे मानवीय भू–दृश्यों को जन्म देती है। प्राकृतिक भू–दृश्यों के विपरीत इन मानवीय भू–दृश्यों में हमारे गाँव, शहर, खेत–खलिहान, कुएँ, बावड़ियाँ, मोटरगाड़ी, कल–कारखाने, धार्मिक स्थल आदि सम्मिलित हैं। विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में लोग किस प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं। आइए हम इस अध्याय में नदी निर्मित एवं तटीय मैदानों में मानव जीवन की दशाओं का अध्ययन करते हैं।

1. मैदानी प्रदेश में मानव जीवन

हमारे देश के उत्तरी पर्वतीय प्रदेश और प्रायद्वीपीय पठार के मध्य गंगा–यमुना का विशाल मैदान स्थित है। यह नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी से निर्मित उपजाऊ क्षेत्र है।

भौतिक दशाएँ—यह भारत का सबसे उपजाऊ मैदान है। इसे चार भागों में बाँटा जाता है। हिमालय पर्वत के निचले भागों में जहाँ कंकड़–पत्थर अधिक पाए जाते हैं, भाबर कहलाता है। यहाँ नदियाँ भूमिगत हो जाती हैं। इसके निकट ही दलदली क्षेत्र पाया जाता है जिसे तराई प्रदेश कहते हैं। नदियों द्वारा बिछाई गई पुरानी जलोढ़ मिट्टी के मैदानों को बांगर कहा जाता है तथा नवीन जलोढ़ मिट्टी के मैदान को खादर कहा जाता है। ग्रीष्म ऋतु में गर्मी बहुत पड़ती है तथा वातावरण उमस भरा रहता है। शीतऋतु में शीत लहर चलती है। किसी सामान्य मैदानी इलाके की तरह यहाँ

मैदान में स्थित खेतों का दृश्य

वर्षा अच्छी होती है इसी कारण से यहाँ भूमिगत जल भी कम गहराई पर ही मिल जाता है। शीतकाल में पष्चिमी चक्रवातों से कभी–कभी वर्षा हो जाती है।

वनस्पति–इस क्षेत्र में पहले काफी वनस्पति पाई जाती थी, किन्तु आबादी एवं कृषि कार्य बढ़ने के कारण यहाँ के वन क्षेत्रों में कमी आई है। पोप्लर, साल, सेमल, शीशम, बबूल, हल्दू एवं कई प्रकार की घास पाई जाती है। पोप्लर का उपयोग प्लाई–वुड बनाने में होता है।

आर्थिक क्रियाएँ–मैदानों की भौगोलिक परिस्थितियाँ कृषि को बढ़ावा देती हैं। यहाँ की उपजाऊ मिट्टी के कारण अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। साल भर खेती होती है और तीन फसलें आराम से हो जाती हैं। वर्षा ऋतु में मुख्य रूप से चावल, मक्का, बाजरा, उड़द, गन्ना आदि बोया जाता है। वहीं सर्दियों में गेंहूँ, सरसों और बरसीम की अच्छी पैदावार होती है। वैसे तो यहाँ मिट्टी इतनी उपजाऊ है कि कोई भी फसल उगा सकते हैं। इन फसलों में मक्का और बरसीम का उपयोग जानवरों की खुराक के रूप में उपयोग होता है। यहाँ गन्ने की फसल भी उगाई जाती है जो चीनी कारखाने में चीनी तथा गुड़ बनाने में काम आता है। लोग खेतों के चारों तरफ पोप्लर के पेड़ उगाते हैं। इससे खेतों का सीमांकन तो होता ही है, साथ ही साथ ये आजीविका के उत्तम स्रोत के रूप में भी उभर रहा है। इनके अलावा आम, लीची और अमरूद के बाग भी हैं। कृषि के साथ लोग पशुपालन भी करते हैं। किसान पशुपालन से प्राप्त दूध, घी आदि को डेयरी में बेचते हैं।

उद्योग–यह क्षेत्र औद्योगिक दृष्टि से बहुत विकसित है। यहाँ अनेक प्रकार के लघु, मध्यम और वृहत उद्योगों का विकास हुआ है। इन उद्योगों में सूती–ऊनी वस्त्र, चीनी, इंजीनियरिंग, काँच, गलीचा निर्माण, चमड़े के उत्पाद निर्माण, प्लास्टिक, रसायन निर्माण एवं खेल का सामान निर्माण आदि हैं। प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों में कानपुर, आगरा, अलीगढ़, मेरठ, मुरादाबाद, फिरोजाबाद और सहारनपुर आदि हैं।

परिवहन–धरातल की एकरूपता और समतल होने के कारण यहाँ परिवहन मार्गों का जाल–सा बिछा हुआ है। प्रायः सभी बड़े नगरों से बस और रेल यातायात की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। सम्पूर्ण मैदान में सार्वजनिक, औद्योगिक और व्यक्तिगत संचार के साधनों का भी विकास हुआ है। क्षेत्र के प्रमुख शहर वायु परिवहन सेवा से भी जुड़े हुए हैं।

जनसंख्या–इस क्षेत्र में कृषि विकास और औद्योगीकरण के कारण जनसंख्या का जमाव अधिक हुआ है। यहाँ सभी समुदाय के लोग रहते हैं। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ रही है, पीढ़ी–दर–पीढ़ी खेत छोटे होते जा रहे हैं। क्या आप बता सकते हैं ऐसा क्यों हो रहा है? क्षेत्र के गाँवों से दो तरह का पलायन होता है। एक तरफ आजीविका के बेहतर अवसरों की तलाश में लोग रोज़ शहर आते–जाते रहते हैं। वहीं सम्पन्न लोग उच्च शिक्षा और अन्य सुविधाओं के लिए पलायन कर रहे हैं। ये सभी लक्षण गंगा–यमुना के मैदानों में आसानी से देखे जा सकते हैं।

आओ करके देखें–

मानव के बसाव के लिए मैदान सबसे अधिक उपयुक्त क्यों रहते हैं ? कारणों की सूची बनाकर चर्चा कीजिए।

2. तटीय मैदानों में मानव जीवन

विश्व पटल पर एशिया महाद्वीप में विविधताओं से भरा हमारा देश भारत स्थित है। इसे प्रकृति ने ख़ास विशेषताओं से सुसज्जित किया है। यहाँ भौगोलिक, वानस्पतिक, जलवायविक, धरातलीय और सांस्कृतिक विविधताएँ दिखाई देती हैं। इस विविधतायुक्त भारतीय उपमहाद्वीप के जहाँ एक ओर हिमालय सजग प्रहरी की तरह खड़ा है, तो दूसरी ओर प्रायद्वीपीय स्थिति के कारण तीनों ओर अथाह जल राशि इसके दक्षिणी भाग को पोषित और पल्लवित करती है। भारत के तटवर्ती क्षेत्रों में कई प्रकार की जैविक और मानवीय विविधताएँ पाई जाती है। यहाँ के पूर्वी और पश्चिमी तटीय मैदानों का विभाजन निम्नानुसार किया जाता है–

(क) पश्चिमी तटीय मैदान– 1. काठियावाड़ तट 2. कोंकण तट 3. कन्नड़ तट 4. मालाबार तट

(ख) पूर्वी तटीय मैदान– 1. उत्तरी सरकार तट 2. कोरोमण्डल तट

आइए अब हम विविधताओं से युक्त मालाबार तटीय प्रदेश की विशेषताओं का अध्ययन करते हैं।

यह प्रदेश भारत के पश्चिमी तट पर गोआ से कन्याकुमारी तक एक संकरी पट्टी में फैला हुआ है, जो सामान्यतः 70 से 90 किलोमीटर चौड़ा है। इसके पश्चिम में अरब सागर, पूर्व में पश्चिमी घाट में स्थित नीलगिरी, अनामलाई और इलायची की पहाड़ियाँ स्थित हैं।

भौतिक दशाएँ—मालाबार तट पश्चिमी तटीय मैदान के दक्षिणी भाग में स्थित है, जो एक संकीर्ण एवं उपजाऊ मैदान है। इस तट पर कई लैगुन पाए जाते हैं। वेंबानाद इसी प्रकार का एक प्रसिद्ध लैगुन है। इस मैदान के पूर्व की ओर पुरानी चट्टानों से बना पहाड़ी क्षेत्र है जो पश्चिमी घाट से जुड़ा हुआ है। समुद्र के निकट होने के कारण इस प्रदेश की जलवायु अत्यन्त नम और सम है। वर्ष भर इसका तापमान 25 डिग्री से 30 डिग्री के आसपास ही रहता है। वार्षिक तापान्तर कम पाया जाता है। यहाँ वार्षिक वर्षा लगभग 250 सेमी. से 400 सेमी. तक होती है जो जून से आरम्भ होकर नवम्बर तक होती रहती है।

वनस्पति—इस प्रदेश का एक–तिहाई भाग वनो से ढका हुआ है। ऊँचे तापमान और अधिक वर्षा के कारण यहाँ सघन सदाबहार वन पाए जाते हैं। यहाँ पर नारियल के वृक्ष अधिक मिलते हैं। इसके अतिरिक्त सागवान, सिनकौना, साल, रबड़, एबोनी, रोजवुड़ आदि वृक्ष भी पाए जाते हैं।

आर्थिक क्रियाएँ—मालाबार प्रदेश प्रमुख रूप से उन्नत कृषि प्रदेश है। कृषि व्यवसाय में लगभग आधी जनसंख्या लगी हुई है। उपजाऊ कांप और दोमट मिट्टी में कई फसलें पैदा की जाती है। मसालों की कृषि भी अधिक की जाती है। कालीमिर्च, लोंग, इलाईची और अन्य मसाले यहाँ अधिक पैदा किये जाते हैं। मैदानी भागों में नारियल, सुपारी, काजू आदि भी पैदा किया जाता है। पश्चिमी घाट के समीपवर्ती पहाडी क्षेत्रों में चाय, कॉफी एवं रबड़ के उद्यान लगे हुए हैं। तट के निकट स्थित होने के कारण मछलियाँ पकड़ना भी एक प्रमुख व्यवसाय है।

तटीय क्षेत्रों में नारियल के वृक्ष

मछलियाँ पकड़ते लोग

यहाँ के तटीय भागों में आणविक खनिज, मोनोजाइट, जिरकन, थोरियम तथा भीतरी भागों में चीनी मिट्टी, चूना पत्थर, गारनेट और ग्रेफाइट पाये जाते हैं। इस प्रदेश में नदियों का बहाव तेज है। अनेक स्थानों पर जलविद्युत उत्पादन और सिंचाई के लिए बाँध बनाए गये हैं।

उद्योग—मालाबार मैदान में तेजी से उद्योग—धंधों का विकास हो रहा है। सूती वस्त्र, नारियल तेल, साबुन, साइकिल के पुर्जे, काँच और रासायनिक पदार्थों के निर्माण के कारखाने हैं। तिरुवनन्तपुरम, अलवाये, कोजीकोड़ प्रमुख औद्योगिक नगर हैं।

परिवहन—आवागमन के मार्गों की इस क्षेत्र में अच्छी सुविधा है। यहाँ सभी प्रकार के परिवहन साधनों जल, थल, वायु परिवहन की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ कई बंदरगाह भी विकसित हुए हैं, जैसे—कोजीकोड, कोच्चि, अलेप्पी, तिरुवनन्तपुरम आदि हैं।

जनसंख्या—यह प्रदेश भारत के अत्यन्त घने बसे प्रदेशों में से एक है। अधिकांश जनसंख्या गांवों में तट के सहारे बसी हुई है। यहाँ रहने वाले मुख्यतः मलयालम एवं अंग्रेजी भाषा बोलते हैं।

आओ करके देखें—
भारत के रूपरेखा मानचित्र में तटीय मैदानों की स्थिति को दर्शाइए।

शब्दावली (Glossary)

जलोढ़ मिट्टी	—	नदियों द्वारा बिछाई गई मिट्टी
बरसीम	—	एक प्रकार की घास
पोप्लर	—	एक प्रकार का पेड़
लैगून	—	समुद्र के तट पर निक्षेप से निर्मित खारे जल की झील को

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प को चुनिए—

(i) 'खादर' शब्द का संबंध किस से है—

(क) मैदान (ख) पर्वत

(ग) पठार (घ) नदी ( )

(ii) निम्नलिखित में से कौनसा एक पश्चिमी तटीय मैदान का भाग नहीं हैं—

(क) कोरोमंडल (ख) कोंकण

(ग) कन्नड़ तट (घ) मालाबार तट ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

   (i) वेंबानाद एक प्रसिद्ध .... है।

   (ii) मालाबार तट पर .... के वृक्ष अधिक मिलते हैं।

   (Iii) गंगा–यमुना के मैदानों में ....मिट्टी पाई जाती है।

   (iv) नदियों द्वारा बिछाई गई पुरानी जलोढ़ मिट्टी के मैदानों को .... कहा जाता है।

3. तटीय मैदान के लोगों के मुख्य व्यवसाय कौन–कौन से हैं?
4. मैदानी क्षेत्रों में कृषि कार्य अधिक क्यों किया जाता है? यहाँ उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों के नाम लिखिए।
5. खादर एवं बांगर में क्या अन्तर है?
6. पूर्वी एवं पश्चिमी तटीय मैदानों के उपभागों के नाम लिखिए।
7. तटीय मैदानों की प्रमुख भौगोलिक दशाओं का वर्णन कीजिए।
8. गंगा–यमुना मैदान में किन–किन उद्योगों का विकास हुआ है?